International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

बहुभाषी शिक्षा में हिंदी सीखने की चुनौतियाँ कक्षा 6 से 10 के विद्यार्थियों पर आधारित एक अध्ययन

Ms. Latangi R[1], Ms. Vidhya Patel[2], Ms. Mridula Vijayakumar[3]

[1,2,3]Student, 10th grade, KRM Public School

सार (Abstract)

भारत एक बहुभाषी एवं बहुसांस्कृतिक देश है, जहाँ विभिन्न राज्यों में अनेक भाषाएँ एवं बोलियाँ प्रचलित हैं। इस भाषाई विविधता के कारण विद्यार्थियों को एक से अधिक भाषाओं का अध्ययन करना पड़ता है। हिंदी भारत की राजभाषा होने के साथ-साथ देश के विभिन्न भागों के लोगों के बीच संपर्क स्थापित करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। इसके बावजूद अनेक विद्यार्थियों, विशेषकर गैर-हिंदी भाषी पृष्ठभूमि से आने वाले विद्यार्थियों, के लिए हिंदी भाषा का अध्ययन चुनौतीपूर्ण सिद्ध होता है। मातृभाषा का प्रभाव, कठिन व्याकरण, सीमित शब्दावली, शुद्ध वर्तनी लिखने में कठिनाई, मात्राओं का सही प्रयोग, नियमित अभ्यास का अभाव तथा हिंदी बोलने का सीमित वातावरण हिंदी अधिगम में प्रमुख बाधाओं के रूप में सामने आते हैं। इन्हीं समस्याओं को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध का संचालन किया गया।

इस शोध का मुख्य उद्देश्य कक्षा 6 से 10 तक के विद्यार्थियों में हिंदी सीखने के दौरान आने वाली कठिनाइयों का अध्ययन करना, उनके प्रमुख कारणों की पहचान करना तथा हिंदी शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाने के लिए व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत करना है। अध्ययन में यह भी समझने का प्रयास किया गया कि विद्यार्थियों की मातृभाषा, विद्यालयी वातावरण तथा शिक्षण पद्धतियाँ हिंदी भाषा सीखने की प्रक्रिया को किस प्रकार प्रभावित करती हैं।

प्रस्तुत अध्ययन के लिए केआरएम पब्लिक स्कूल के कक्षा 6 से 10 तक के कुल 700 विद्यार्थियों का प्रश्नावली-आधारित सर्वेक्षण किया गया। प्रत्येक कक्षा से समान संख्या में विद्यार्थियों का चयन कर उनके उत्तरों का विश्लेषण किया गया। सर्वेक्षण के अनुसार 700 में से 550 विद्यार्थियों ने हिंदी को सीखने में कठिन भाषा माना, जबकि 150 विद्यार्थियों ने इसे कठिन नहीं माना। प्राप्त आँकड़ों से यह स्पष्ट हुआ कि हिंदी सीखने में सबसे अधिक कठिनाई व्याकरण (180 विद्यार्थी) में होती है। इसके अतिरिक्त शब्दावली (140), वर्तनी (130), पठन कौशल (100), बोलने का कौशल (90) तथा अन्य कारणों (60) को भी विद्यार्थियों ने प्रमुख कठिनाइयों के रूप में चिन्हित किया। इन परिणामों से यह भी स्पष्ट हुआ कि जिन विद्यार्थियों की मातृभाषा हिंदी नहीं है, उन्हें हिंदी के उच्चारण, शब्दों के प्रयोग तथा वाक्य संरचना को समझने में अपेक्षाकृत अधिक समय और अभ्यास की आवश्यकता होती है।

अध्ययन के निष्कर्षों से यह ज्ञात हुआ कि यदि विद्यालयों में गतिविधि-आधारित, संवादात्मक तथा छात्र-केंद्रित शिक्षण पद्धतियों को अपनाया जाए, नियमित भाषा-अभ्यास को प्रोत्साहित किया जाए तथा अभिभावकों और शिक्षकों द्वारा सकारात्मक एवं सहयोगात्मक वातावरण प्रदान किया जाए, तो विद्यार्थियों की हिंदी भाषा दक्षता में उल्लेखनीय सुधार किया जा सकता है। हिंदी कहानी-पुस्तकों का पठन, दैनिक वार्तालाप, भाषा खेल, डिजिटल शिक्षण सामग्री तथा निरंतर अभ्यास विद्यार्थियों की रुचि और आत्मविश्वास को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

यह शोध बहुभाषी शिक्षा के संदर्भ में हिंदी भाषा शिक्षण की वर्तमान चुनौतियों को समझने का एक प्रयास है। इसके निष्कर्ष शिक्षकों, अभिभावकों, विद्यालय प्रशासकों तथा शिक्षा-नीति निर्माताओं के लिए उपयोगी हो सकते हैं। साथ ही, यह अध्ययन भविष्य में भाषा-अधिगम एवं बहुभाषी शिक्षा से संबंधित अनुसंधानों के लिए एक आधार प्रदान करता है तथा हिंदी शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार हेतु व्यावहारिक दिशा-निर्देश प्रस्तुत करता है।

परिकल्पना (Hypothesis)

मुख्य शोध परिकल्पना (Research Hypothesis – H_1)

यह परिकल्पना की जाती है कि बहुभाषी शिक्षा व्यवस्था में अध्ययनरत विद्यार्थियों के हिंदी भाषा अधिगम पर उनकी मातृभाषा, भाषाई विविधता, शिक्षण-पद्धति, शिक्षकों की भाषायी दक्षता, उपलब्ध शिक्षण-संसाधन, विद्यालय का भाषायी वातावरण तथा विद्यार्थियों की भाषा के प्रति अभिरुचि का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। जिन विद्यार्थियों को उनकी मातृभाषा के साथ समन्वित एवं छात्र-केंद्रित शिक्षण उपलब्ध होता है, वे हिंदी भाषा को अधिक प्रभावी ढंग से सीखते हैं तथा उनकी भाषा दक्षता, पठन-बोध, लेखन-कौशल, मौखिक अभिव्यक्ति और शैक्षणिक उपलब्धि अपेक्षाकृत बेहतर होती है। इसके विपरीत, जिन शिक्षार्थियों को भाषाई असमानता, सीमित शिक्षण-संसाधन, अनुपयुक्त शिक्षण-विधियों तथा बहुभाषी कक्षाओं में समुचित भाषाई सहयोग का अभाव मिलता है, उनके लिए हिंदी भाषा का अधिगम अधिक चुनौतीपूर्ण हो जाता है। अतः यह अपेक्षित है कि बहुभाषी शिक्षा में प्रभावी शिक्षण-रणनीतियों, मातृभाषा-आधारित सहायक शिक्षण तथा समावेशी भाषायी वातावरण के माध्यम से हिंदी सीखने में आने वाली कठिनाइयों को उल्लेखनीय रूप से कम किया जा सकता है तथा विद्यार्थियों की भाषा दक्षता और शैक्षणिक उपलब्धि में सकारात्मक एवं सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण सुधार प्राप्त किया जा सकता है।

शून्य परिकल्पना (Null Hypothesis – H_0)

यह परिकल्पना की जाती है कि बहुभाषी शिक्षा व्यवस्था में अध्ययनरत विद्यार्थियों के हिंदी भाषा अधिगम पर उनकी मातृभाषा, भाषाई विविधता, शिक्षण-पद्धति, शिक्षकों की भाषायी दक्षता, शिक्षण-संसाधनों की उपलब्धता, विद्यालयी वातावरण तथा भाषा के प्रति अभिरुचि का कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ता। इन कारकों में परिवर्तन होने पर भी विद्यार्थियों की हिंदी भाषा दक्षता, पठन, लेखन, श्रवण, वाचन तथा शैक्षणिक उपलब्धि में कोई उल्लेखनीय अंतर नहीं पाया जाएगा।

मुख्य शब्द (Keywords):

- बहुभाषी शिक्षा,
- हिंदी भाषा शिक्षण,
- भाषा सीखने में कठिनाइयाँ
- मातृभाषा,
- छात्र सर्वेक्षण
- व्याकरण
- शब्दावली
- वर्तनी
- भाषा अधिगम
- शिक्षण पद्धतियाँ

परिचय(INTRODUCTION)

भारत में भाषाओं और बोलियों की विविधता देश की सांस्कृतिक और सामाजिक समृद्धि का प्रतिबिंब हो सकती है। भारत दुनिया की सबसे अलग-थलग आबादी में से एक है, जिसमें सैकड़ों भाषाएँ और बोलियाँ हैं। भारत के स्कूल बच्चों के लिए इसका अर्थ है कि उन्हें अपनी मातृभाषा के साथ-साथ अन्य भाषाएँ भी सीखनी पड़ती हैं। आधिकारिक भाषा होने के नाते, हिंदी विभिन्न राज्यों के बीच मुख्य संचार का माध्यम है। हिंदी संचार का तरीका बनाती है और अन्य

भारतीय संस्कृतियों, साहित्य और इतिहास को बढ़ावा देती है तथा राष्ट्रीय एकता को मजबूत करती है। हिंदी का अध्ययन छात्रों के समग्र विकास और प्रगति के लिए अनिवार्य है क्योंकि हिंदी का व्यापक रूप से शिक्षा, प्रशासन, मीडिया, साहित्य और अधिकांश प्रतियोगी परीक्षाओं में उपयोग किया जाता है।

यह सच्चाई के बावजूद कि हिंदी एक महत्वपूर्ण भाषा है, वास्तविकता यह है कि इसके अध्ययन में कई छात्रों के लिए कठिनाई होती है। हिंदी सीखने की चुनौतियाँ विशेष रूप से बहुभाषी विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों में अधिक स्पष्ट हो जाती हैं। जिन विद्यार्थियों की पहली भाषा हिंदी नहीं है, उन्हें न केवल हिंदी सीखने में बल्कि उसकी pronunciation, व्याकरण, वाक्य संरचना, शब्दावली, वर्तनी और मात्राओं के उपयोग में भी अधिक समय और अभ्यास की आवश्यकता होती है। अपनी मातृभाषा के उच्चारण शैली और व्याकरण का उपयोग करके हिंदी सीखने का प्रयास भी भाषा सीखने की प्रक्रिया को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। आत्मविश्वास की कमी, भाषा का अभ्यास करने में झिझक, और पढ़ाई में सामान्य रुचि की कमी ये सामान्य समस्याएँ हैं जो इन छात्रों को अक्सर अनुभव होती हैं।भाषा अधिगम केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं होता, बल्कि यह निरंतर अभ्यास, प्रभावी संवाद, सकारात्मक वातावरण तथा व्यवहारिक अनुभवों पर भी आधारित होता है। यदि विद्यार्थियों को विद्यालय और घर दोनों स्थानों पर हिंदी बोलने, पढ़ने और लिखने के पर्याप्त अवसर प्राप्त हों, तो भाषा सीखने की प्रक्रिया अधिक सरल और प्रभावी बन सकती है। इसके विपरीत यदि विद्यार्थियों को हिंदी का सीमित संपर्क प्राप्त हो, तो उनकी भाषा दक्षता अपेक्षित स्तर तक विकसित नहीं हो पाती। इसलिए भाषा शिक्षण में केवल व्याकरण पढ़ाना पर्याप्त नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों को भाषा का वास्तविक और सक्रिय प्रयोग करने के अवसर प्रदान करना भी आवश्यक है।वर्तमान समय में शिक्षा प्रणाली में बहुभाषी शिक्षा (Multilingual Education) की अवधारणा को विशेष महत्व दिया जा रहा है। नई शिक्षा नीति (NEP 2020) भी मातृभाषा आधारित शिक्षण तथा बहुभाषी अधिगम को प्रोत्साहित करती है। इस संदर्भ में यह समझना अत्यंत आवश्यक है कि बहुभाषी वातावरण में हिंदी सीखने के दौरान विद्यार्थियों को किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा इन कठिनाइयों को दूर करने के लिए कौन-से शैक्षिक उपाय अधिक प्रभावी सिद्ध हो सकते हैं। ऐसी जानकारी शिक्षकों, अभिभावकों तथा शिक्षा-नीति निर्माताओं को भाषा शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार करने में सहायता प्रदान कर सकती है।प्रस्तुत शोध "बहुभाषी शिक्षा में हिंदी सीखने की चुनौतियाँ: कक्षा 6 से 10 के विद्यार्थियों पर आधारित एक अध्ययन" इसी उद्देश्य से किया गया है। इस अध्ययन में केआरएम पब्लिक स्कूल के कक्षा 6 से 10 तक के 700 विद्यार्थियों पर प्रश्नावली-आधारित सर्वेक्षण के माध्यम से हिंदी सीखने में आने वाली कठिनाइयों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में व्याकरण, शब्दावली, वर्तनी, पठन, बोलने की क्षमता, नियमित अभ्यास तथा मातृभाषा के प्रभाव जैसे प्रमुख पहलुओं का विस्तार से परीक्षण किया गया है। साथ ही, विद्यार्थियों, शिक्षकों तथा अभिभावकों की भूमिका का भी अध्ययन किया गया है ताकि हिंदी शिक्षण को अधिक प्रभावी, रुचिकर तथा विद्यार्थी-केंद्रित बनाया जा सक।

साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

भाषा शिक्षा किसी भी शिक्षा प्रणाली का एक महत्वपूर्ण अंग है, क्योंकि भाषा के माध्यम से ही विद्यार्थी ज्ञान का अर्जन करते हैं, अपने विचारों को अभिव्यक्त करते हैं तथा सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन में सक्रिय भागीदारी निभाते हैं। बहुभाषी समाज में भाषा अधिगम की प्रक्रिया और भी जटिल हो जाती है, क्योंकि विद्यार्थी अपनी मातृभाषा के साथ-साथ दूसरी या तीसरी भाषा भी सीखते हैं। इस कारण भाषा शिक्षण एवं अधिगम से संबंधित पूर्ववर्ती अध्ययनों का अध्ययन प्रस्तुत शोध के लिए अत्यंत आवश्यक है।

विभिन्न शिक्षा विशेषज्ञों का मत है कि भाषा अधिगम केवल व्याकरणिक नियमों को याद करने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने जैसे चारों भाषा कौशलों के संतुलित विकास पर आधारित होता है। प्रभावी भाषा शिक्षण के लिए विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में भाषा का प्रयोग करने के अवसर प्रदान किए

जाने चाहिए। इससे भाषा सीखने की प्रक्रिया अधिक स्वाभाविक, रुचिकर और स्थायी बनती है। (यहाँ उपयुक्त संदर्भ जोड़ें।)

हिंदी भाषा शिक्षण से संबंधित अनेक अध्ययनों में यह उल्लेख किया गया है कि जिन विद्यार्थियों की मातृभाषा हिंदी नहीं होती, उन्हें हिंदी सीखने में अपेक्षाकृत अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। विशेष रूप से उच्चारण, व्याकरण, वर्तनी, शब्दावली तथा वाक्य संरचना से संबंधित समस्याएँ अधिक देखने को मिलती हैं। इन कठिनाइयों का प्रमुख कारण विद्यार्थियों की प्रथम भाषा का दूसरी भाषा पर पड़ने वाला प्रभाव माना गया है। (यहाँ संबंधित शोध का संदर्भ जोड़ें।)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बहुभाषी शिक्षा को विशेष महत्व दिया गया है। नीति के अनुसार प्रारम्भिक शिक्षा में मातृभाषा या स्थानीय भाषा का प्रयोग विद्यार्थियों की समझ, रचनात्मकता तथा सीखने की क्षमता को सुदृढ़ बनाता है। साथ ही, अन्य भाषाओं के अध्ययन के लिए भी एक मजबूत आधार तैयार करता है। इस दृष्टिकोण से बहुभाषी शिक्षा विद्यार्थियों के समग्र भाषाई विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। (NEP 2020 का संदर्भ जोड़ें।)

एनसीईआरटी तथा सीबीएसई द्वारा प्रकाशित हिंदी भाषा शिक्षण संबंधी दिशा-निर्देशों में गतिविधि-आधारित शिक्षण, समूह कार्य, संवादात्मक अभ्यास, पठन सामग्री का नियमित उपयोग तथा सतत मूल्यांकन को भाषा दक्षता विकसित करने के प्रभावी साधन बताया गया है। इन दिशा-निर्देशों के अनुसार विद्यार्थियों को केवल पाठ्यपुस्तक तक सीमित न रखकर भाषा के व्यवहारिक उपयोग के अवसर भी प्रदान किए जाने चाहिए। (NCERT/CBSE संदर्भ जोड़ें।)

डॉ. भोलानाथ तिवारी द्वारा हिंदी भाषा एवं व्याकरण पर किए गए कार्यों में हिंदी व्याकरण की संरचना, भाषा के शुद्ध प्रयोग तथा भाषा शिक्षण की आवश्यकता पर विशेष बल दिया गया है। इसी प्रकार डॉ. हरदेव बाहरी द्वारा तैयार हिंदी शब्दकोश हिंदी शब्दावली के विकास और सही शब्द प्रयोग के लिए एक महत्वपूर्ण स्रोत माना जाता है। इन दोनों विद्वानों के कार्य हिंदी भाषा अध्ययन के लिए आधारभूत महत्व रखते हैं।

द्वितीय भाषा अधिगम से संबंधित शोधों में यह भी पाया गया है कि भाषा सीखने में विद्यार्थियों की प्रेरणा, आत्मविश्वास, नियमित अभ्यास तथा शिक्षक का सहयोग अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यदि विद्यार्थियों को प्रोत्साहनपूर्ण वातावरण, संवाद के अवसर तथा त्रुटियों से सीखने की स्वतंत्रता दी जाए, तो उनकी भाषा दक्षता में उल्लेखनीय सुधार देखा जाता है। इसके विपरीत भय, संकोच और अभ्यास की कमी भाषा विकास को बाधित कर सकते हैं। (यहाँ संबंधित शोध का संदर्भ जोड़ें।)

पूर्ववर्ती अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि बहुभाषी वातावरण में हिंदी सीखने की चुनौतियाँ केवल भाषाई नहीं, बल्कि शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक कारकों से भी प्रभावित होती हैं। यद्यपि अनेक शोधों में भाषा अधिगम, मातृभाषा के प्रभाव तथा शिक्षण पद्धतियों का अध्ययन किया गया है, फिर भी विद्यालय स्तर पर कक्षा 6 से 10 के विद्यार्थियों की वास्तविक कठिनाइयों पर आधारित स्थानीय सर्वेक्षण अपेक्षाकृत कम उपलब्ध हैं। प्रस्तुत शोध इसी शोध-अंतर (Research Gap) को ध्यान में रखते हुए केआरएम पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों पर आधारित सर्वेक्षण के माध्यम से हिंदी सीखने की चुनौतियों का विश्लेषण करता है। यह अध्ययन पूर्ववर्ती शोधों का विस्तार करते हुए व्यवहारिक सुझाव भी प्रस्तुत करता है, जिससे बहुभाषी शिक्षा के संदर्भ में हिंदी भाषा शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाया जुड़ जाता है।

अध्ययन के उद्देश्य

बहुभाषी शिक्षा में हिंदी सीखने की प्रमुख चुनौतियों की पहचान करना।
मातृभाषा के प्रभाव का हिंदी अधिगम पर अध्ययन करना।
हिंदी शिक्षण में शिक्षकों और शिक्षण संसाधनों की भूमिका का विश्लेषण करना।
विद्यार्थियों की रुचि, प्रेरणा और अभ्यास का मूल्यांकन करना।

हिंदी शिक्षण को प्रभावी बनाने हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।
यह अध्ययन वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति पर आधारित होगा। अध्ययन में विद्यार्थियों एवं शिक्षकों से प्राप्त अनुभवों, विचारों और तथ्यों का व्यवस्थित विश्लेषण किया जाएगा। शोध में गुणात्मक तथा मात्रात्मक दोनों प्रकार की सूचनाओं का उपयोग किया जाएगा ताकि विषय की वास्तविक स्थिति को व्यापक रूप से समझा जा सके।

शोध अभिकल्प (Research Design)
प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण अभिकल्प अपनाया जाएगा। प्रश्नावली, साक्षात्कार और अवलोकन के माध्यम से जानकारी एकत्र कर उसका विश्लेषण किया जाएगा।

- **जनसंख्या (Population)**
  इस अध्ययन की जनसंख्या में बहुभाषी विद्यालयों के विद्यार्थी तथा हिंदी शिक्षक शामिल होंगे।
- **नमूना (Sample)**
  अध्ययन के लिए लगभग 120 विद्यार्थी एवं 20 हिंदी शिक्षकों का चयन किया जाएगा ताकि विभिन्न भाषाई पृष्ठभूमियों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित हो।
- **नमूना चयन तकनीक (Sampling Technique)**
  सरल यादृच्छिक नमूना चयन (Simple Random Sampling) का उपयोग किया जाएगा। विद्यालयों के चयन हेतु आवश्यकता होने पर उद्देश्यपूर्ण नमूना तकनीक भी अपनाई जा सकती है।
- **आँकड़ा संग्रह (Data Collection)**
  प्राथमिक आँकड़े प्रश्नावली, साक्षात्कार एवं अवलोकन से प्राप्त किए जाएँगे। द्वितीयक आँकड़े पुस्तकों, शोध-पत्रों, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, एनसीईआरटी तथा अन्य विश्वसनीय शैक्षणिक स्रोतों से संकलित किए जाएँगे।

संदर्भ(REFERENCES)
1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020.
2. NCERT (2023). Language Education Documents.
3. UGC Research Methodology Guidelines.
4. कृष्ण कुमार. भाषा और शिक्षा.

समस्या का कथन(Statement Of Problem)
भारत विश्व के उन देशों में से एक है जहाँ भाषाई विविधता सबसे अधिक देखने को मिलती है। एक ही कक्षा में अनेक विद्यार्थी अलग-अलग मातृभाषाओं के साथ शिक्षा प्राप्त करते हैं। ऐसी स्थिति में हिंदी का अधिगम केवल भाषा सीखने तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह सांस्कृतिक, सामाजिक तथा शैक्षिक अनुभवों से भी
डेटा एनालिसिस, इंटरप्रिटेशन और नतीजे
10.1 इंट्रोडक्शन
डेटा एनालिसिस रिसर्च के सबसे ज़रूरी स्टेज में से एक है क्योंकि यह इकट्ठा की गई जानकारी को काम के नतीजों में बदलने में मदद करता है। यह रिसर्चर्स को पैटर्न पहचानने, प्रॉब्लम समझने और पार्टिसिपेंट्स से मिले जवाबों के आधार पर नतीजे निकालने में मदद करता है।
"बहुभाषी शिक्षा में हिंदी: एक स्टडी" नाम की इस रिसर्च स्टडी का मकसद मल्टीलिंगुअल एजुकेशनल माहौल में हिंदी की भूमिका की जांच करना और हिंदी सीखते समय स्टूडेंट्स को होने वाली मुश्किलों को समझना है। भारत जैसे

मल्टीलिंगुअल समाज में, स्टूडेंट्स अलग-अलग लिंग्विस्टिक बैकग्राउंड से आते हैं और अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में कई भाषाओं का इस्तेमाल करते हैं। यह डाइवर्सिटी भाषा सीखने में मौके और मुश्किलें दोनों पैदा करती है।
इस स्टडी के लिए, हिंदी सीखने के बारे में उनके अनुभव और राय को समझने के लिए 700 पार्टिसिपेंट्स के बीच एक क्वेश्चनेयर-बेस्ड सर्वे किया गया। इकट्ठा किए गए जवाबों को सिस्टमैटिक तरीके से ऑर्गनाइज़ और एनालाइज़ किया गया। एनालिसिस उन बड़े एरिया की पहचान करने पर फोकस करता है जहां स्टूडेंट्स को मुश्किलों का सामना करना पड़ता है और इन मुश्किलों के पीछे के कारणों को समझना है।
इस सेक्शन में एनालाइज़ किया गया सर्वे सवाल है:
"किस हिस्से में लोगों को हिंदी मुश्किल लगती है?"
इस सवाल का मकसद उन खास भाषा स्किल्स की पहचान करना था जो स्टूडेंट्स के लिए मुश्किलें पैदा करती हैं। जवाबों से उन एरिया के बारे में जानकारी मिलती है जिन पर हिंदी पढ़ाने और सीखने के तरीकों में ज़्यादा ध्यान देने की ज़रूरत है।

10.2 डेटा प्रेजेंटेशन

700 पार्टिसिपेंट्स से इकट्ठा किए गए जवाबों को छह कैटेगरी में बांटा गया: ग्रामर, वोकैबुलरी, स्पेलिंग, रीडिंग, स्पीकिंग, और दूसरी मुश्किलें।

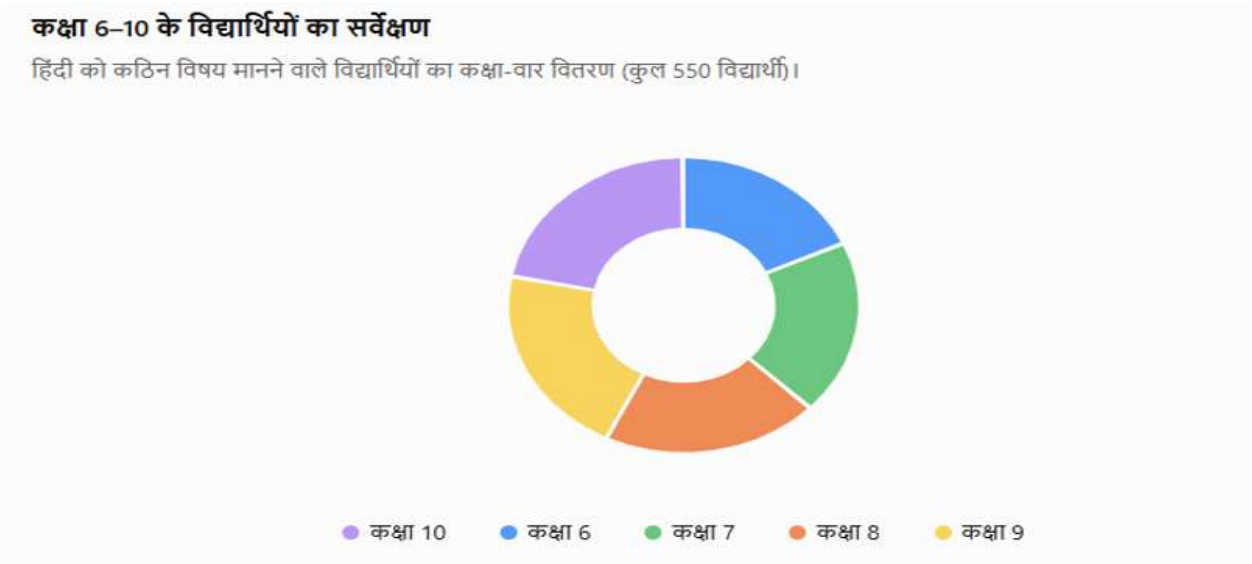

सर्वेक्षण सारणी (कुल 700 विद्यार्थी)

कक्षा	कुल विद्यार्थी	हिंदी कठिन है	हिंदी कठिन नहीं है
6	140	100	40
7	140	105	35
8	140	110	30
9	140	115	25
10	140	120	20
कुल	**700**	**550**	**150**

डेटा से साफ़ पता चलता है कि हिंदी भाषा सीखने के अलग-अलग पहलुओं में सीखने वालों को मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। सभी कैटेगरी में, ग्रामर को सबसे ज़्यादा जवाब मिले, जिससे पता चलता है कि यह सीखने वालों के लिए सबसे मुश्किल एरिया है।

10.3 डेटा का ग्राफ़िकल रिप्रेजेंटेशन

सर्वे डेटा को जवाबों का डिस्ट्रीब्यूशन दिखाने के लिए बार ग्राफ़ या पाई चार्ट के ज़रिए दिखाया जा सकता है।

ग्राफ़िकल रिप्रेजेंटेशन से पता चलता है कि:

मुश्किलों में ग्रामर सबसे बड़ा हिस्सा रखता है।

वोकैबुलरी और स्पेलिंग भी चिंता के मुख्य एरिया हैं।

पढ़ने और बोलने में मुश्किलें तुलना में कम हैं लेकिन फिर भी काफ़ी हैं।

सीखने वालों का एक छोटा परसेंटेज दूसरी चुनौतियों का सामना करता है।

ग्राफ़ दिखाता है कि हिंदी सीखने के लिए सिर्फ़ एक एरिया पर फ़ोकस करने के बजाय सभी भाषा स्किल्स पर ध्यान देने की ज़रूरत है।

10.4 सर्वे के जवाबों का मतलब

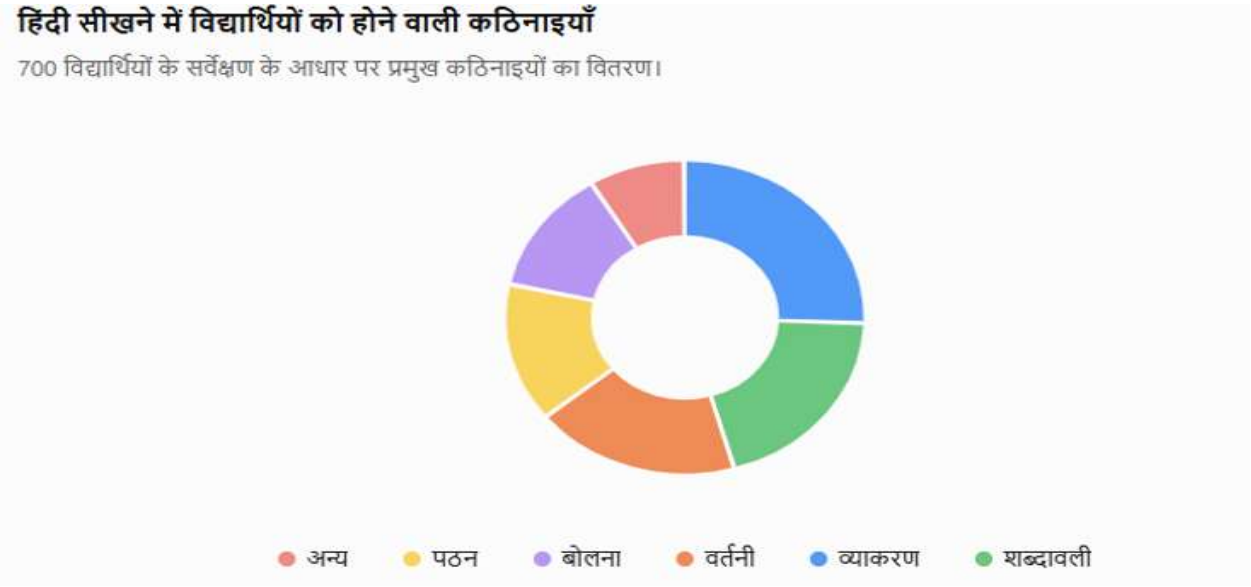

कठिनाई का क्षेत्र	विद्यार्थियों की संख्या
व्याकरण (Grammar)	180
शब्दावली (Vocabulary)	140
वर्तनी (Spelling)	130
पठन (Reading)	100
बोलना (Speaking)	90
अन्य (Other)	60
कुल	**700**

10.4.1 हिंदी ग्रामर में मुश्किल

सबसे ज़्यादा हिस्सा लेने वालों, 180 जवाब देने वालों (25.71%) ने कहा कि हिंदी सीखने में ग्रामर सबसे मुश्किल हिस्सा है।

ग्रामर किसी भी भाषा की नींव होती है क्योंकि यह सही सेंटेंस बनाने और कम्युनिकेशन के लिए नियम बताती है। हिंदी में, सीखने वालों को अक्सर इन कॉन्सेप्ट्स में मुश्किल होती है:

जेंडर की पहचान (लिंग)

सेंटेंस स्ट्रक्चर

वर्ब फॉर्म

टेंस

शब्दों के बीच मेल

ग्रामर के नियमों का सही इस्तेमाल

अलग-अलग लिंग्विस्टिक बैकग्राउंड वाले स्टूडेंट्स के लिए, हिंदी ग्रामर मुश्किल हो सकता है क्योंकि ग्रामर के पैटर्न उनकी पहली भाषा से अलग हो सकते हैं।

उदाहरण के लिए, जिन स्टूडेंट्स की होम लैंग्वेज में अलग सेंटेंस स्ट्रक्चर हैं, उन्हें हिंदी सेंटेंस बनाने को समझने के लिए और प्रैक्टिस की ज़रूरत पड़ सकती है।

एजुकेशनल मतलब:

जवाब से पता चलता है कि हिंदी टीचिंग को सिर्फ़ नियम रटने के बजाय प्रैक्टिकल ग्रामर सीखने पर फ़ोकस करना चाहिए। टीचर ग्रामर को आसान बनाने के लिए रोज़ाना की कम्युनिकेशन, एक्टिविटीज़ और एक्सरसाइज़ से उदाहरण इस्तेमाल कर सकते हैं। निष्कर्ष:

सीखने वालों के बीच ग्रामर सबसे बड़ी चुनौती है, जो बेहतर टीचिंग स्ट्रेटेजी और रेगुलर प्रैक्टिस की ज़रूरत को दिखाता है।

10.4.2 हिंदी वोकैबुलरी में मुश्किल

सर्वे के मुताबिक, 140 पार्टिसिपेंट्स (20%) को वोकैबुलरी मुश्किल लगी।

लैंग्वेज डेवलपमेंट में वोकैबुलरी का अहम रोल होता है क्योंकि किसी इंसान की बातचीत करने की काबिलियत सही शब्दों को जानने और इस्तेमाल करने पर निर्भर करती है।

सीखने वालों को अक्सर मुश्किल इसलिए होती है क्योंकि:

हिंदी में कई फॉर्मल और लिटरेरी शब्द होते हैं।

कुछ शब्द रोज़ाना की बातचीत में बहुत कम इस्तेमाल होते हैं।

स्टूडेंट्स को हिंदी रीडिंग मटीरियल कम मिल पाता है।

एक जैसे शब्द कन्फ्यूजन पैदा कर सकते हैं।

मल्टीलिंगुअल क्लासरूम में, स्टूडेंट्स पहले से ही अपनी मदर टंग या इंग्लिश का रेगुलर इस्तेमाल कर सकते हैं, जिससे हिंदी वोकैबुलरी डेवलप करने के उनके मौके कम हो जाते हैं।

एजुकेशनल इंटरप्रिटेशन:

वोकैबुलरी डेवलपमेंट के लिए पढ़ने, बातचीत, कहानी सुनाने और क्लासरूम एक्टिविटीज़ के ज़रिए लगातार एक्सपोज़र की ज़रूरत होती है।

फाइंडिंग:

वोकैबुलरी दूसरा बड़ा मुश्किल एरिया है और इसके लिए प्रैक्टिकल लैंग्वेज एक्टिविटीज़ के ज़रिए ज़्यादा फोकस करने की ज़रूरत होती है।

10.4.4 हिंदी पढ़ने में मुश्किल

100 पार्टिसिपेंट्स (14.29%) ने पढ़ने को एक मुश्किल एरिया बताया।

रीडिंग स्किल्स के लिए वोकैबुलरी, प्रोनाउन्सिएशन, सेंटेंस का मतलब और ओवरऑल कॉन्टेक्स्ट को समझना ज़रूरी है। जिन स्टूडेंट्स को हिंदी रीडिंग मटीरियल की कम जानकारी है, उन्हें टेक्स्टबुक्स और एडवांस्ड पैसेज मुश्किल लग सकते हैं।

पढ़ने की काबिलियत पर असर डालने वाले फैक्टर्स में शामिल हैं:

रेगुलर पढ़ने की आदतों की कमी

लिमिटेड वोकैबुलरी

मुश्किल सेंटेंस को समझने में मुश्किल

हिंदी लिटरेचर से कम जान-पहचान

एजुकेशनल इंटरप्रिटेशन:

स्कूलों को स्टूडेंट्स को हिंदी कहानियाँ, अखबार, कविताएँ और उम्र के हिसाब से लिटरेचर पढ़ने के लिए बढ़ावा देना चाहिए।

फाइंडिंग:

रीडिंग प्रैक्टिस से वोकैबुलरी, प्रोनाउन्सिएशन और ओवरऑल लैंग्वेज कॉन्फिडेंस बेहतर हो सकता है।

10.4.5 हिन्दी बोलने में कठिनाई

90 प्रतिभागियों (12.86%) ने बताया कि बोलना एक कठिन क्षेत्र है।

कुछ शिक्षार्थी हिंदी समझते हैं लेकिन बोलने में झिझकते हैं क्योंकि:

आत्मविश्वास की कमी

गलतियाँ करने का डर

बोलने के सीमित अवसर

दूसरी भाषा का प्रभाव

नियमित संचार और अभ्यास से बोलने की क्षमता विकसित होती है।

शैक्षिक व्याख्या:

कक्षा में चर्चा, बहस, भूमिका निभाना और प्रस्तुतियाँ छात्रों को अधिक आत्मविश्वास से हिंदी का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित कर सकती हैं।

ढूँढना:

बोलने में कठिनाइयाँ सहायक वातावरण बनाने के महत्व को दर्शाती हैं जहाँ शिक्षार्थी बिना किसी हिचकिचाहट के हिंदी का अभ्यास कर सकें।

10.5 स्टडी के कुल नतीजे

700 पार्टिसिपेंट्स के जवाबों के एनालिसिस के आधार पर, ये नतीजे सामने आए:

1. हिंदी सीखने में ग्रामर, वोकैबुलरी, स्पेलिंग, रीडिंग और स्पीकिंग जैसे कई एरिया में चैलेंज शामिल हैं।
2. 25.71% जवाब देने वालों के अनुसार, ग्रामर हिंदी का सबसे मुश्किल हिस्सा है।
3. वोकैबुलरी डेवलपमेंट सीखने वालों के सामने एक और बड़ी चुनौती है।

4. स्पेलिंग की मुश्किलें, खासकर मात्राओं और लिखने की सटीकता से जुड़ी, स्टूडेंट्स के कॉन्फिडेंस पर असर डालती हैं।
5. पढ़ने और बोलने के लिए ज़्यादा प्रैक्टिकल एक्सपोज़र और रेगुलर प्रैक्टिस की ज़रूरत होती है।
6. मल्टीलिंगुअल बैकग्राउंड वाले सीखने वालों को ऐसे टीचिंग मेथड की ज़रूरत होती है जो उनके मौजूदा भाषा ज्ञान को ध्यान में रखें।
7. एक्टिविटी-बेस्ड और कम्युनिकेशन-बेस्ड टीचिंग मेथड हिंदी सीखने के नतीजों को बेहतर बना सकते हैं।

एक सपोर्टिव मल्टीलिंगुअल क्लासरूम स्टूडेंट्स को बेहतर भाषा स्किल डेवलप करने में मदद कर सकता है।

10.6 एजुकेशनल असर

इस रिसर्च के नतीजों का हिंदी एजुकेशन पर ज़रूरी असर है:
टीचर्स को लर्नर-सेंटर्ड टीचिंग मेथड अपनाने चाहिए।
हिंदी लर्निंग में रियल-लाइफ कम्युनिकेशन एक्टिविटीज़ शामिल होनी चाहिए।
स्टूडेंट्स को पढ़ने और लिखने की प्रैक्टिस के ज़्यादा मौके मिलने चाहिए।
मल्टीलिंगुअल बैकग्राउंड को रुकावट के बजाय एक फ़ायदा मानना चाहिए।
टेक्नोलॉजी और क्रिएटिव रिसोर्स हिंदी लर्निंग को और ज़्यादा एंगेजिंग बना सकते हैं।

10.7 डेटा एनालिसिस की समरी

700 पार्टिसिपेंट्स के सर्वे के जवाबों के एनालिसिस से पता चलता है कि हिंदी मल्टीलिंगुअल एजुकेशन में एक ज़रूरी भाषा बनी हुई है, लेकिन सीखने वालों को अलग-अलग भाषा स्किल्स में मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। ग्रामर, वोकैबुलरी और स्पेलिंग सबसे मुश्किल एरिया हैं, जबकि पढ़ने और बोलने में भी सुधार की ज़रूरत है।
रिज़ल्ट एक बैलेंस्ड अप्रोच की ज़रूरत को दिखाते हैं जो ट्रेडिशनल भाषा सीखने को प्रैक्टिकल एक्टिविटीज़ के साथ जोड़ता है। असरदार टीचिंग स्ट्रेटेजी सीखने वालों को मुश्किलों को दूर करने और हिंदी कम्युनिकेशन में कॉन्फिडेंस डेवलप करने में मदद कर सकती हैं।

संदर्भ(REFERENCES)

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020.
2. NCERT (2023). Language Education Documents.
3. UGC Research Methodology Guidelines.
4. कृष्ण कुमार. भाषा और शिक्षा.

समस्या का कथन(Statement Of Problem)

भारत विश्व के उन देशों में से एक है जहाँ भाषाई विविधता सबसे अधिक देखने को मिलती है। एक ही कक्षा में अनेक विद्यार्थी अलग-अलग मातृभाषाओं के साथ शिक्षा प्राप्त करते हैं। ऐसी स्थिति में हिंदी का अधिगम केवल भाषा सीखने तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह सांस्कृतिक, सामाजिक तथा शैक्षिक अनुभवों से भी

निष्कर्ष

इस शोध अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि बहुभाषी शिक्षा के परिवेश में हिंदी भाषा का अधिगम एक बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसमें विद्यार्थियों की भाषाई पृष्ठभूमि, सीखने का वातावरण, शिक्षण पद्धतियाँ और उपलब्ध संसाधन महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अलग-अलग मातृभाषाओं से आने वाले विद्यार्थियों के लिए हिंदी

सीखना कई बार चुनौतीपूर्ण हो जाता है, क्योंकि उन्हें नई भाषा की संरचना, शब्दावली, व्याकरण, उच्चारण तथा अभिव्यक्ति के नए तरीकों को समझना पड़ता है।

अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि हिंदी सीखने में आने वाली कठिनाइयाँ केवल विद्यार्थियों की भाषा क्षमता से संबंधित नहीं हैं, बल्कि कक्षा के भाषायी वातावरण, शिक्षण विधियों और अभ्यास के अवसरों से भी जुड़ी होती हैं। विशेष रूप से व्याकरण, शब्दों के सही प्रयोग, वर्तनी और बोलने के कौशल में विद्यार्थियों को अधिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। यदि शिक्षण प्रक्रिया विद्यार्थियों की भाषाई विविधता को ध्यान में रखकर तैयार की जाए, तो हिंदी सीखने की प्रक्रिया अधिक सरल और प्रभावी बनाई जा सकती है।

बहुभाषी कक्षाओं में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। एक संवेदनशील और प्रशिक्षित शिक्षक विद्यार्थियों की भाषाई भिन्नताओं को समझकर ऐसी शिक्षण गतिविधियाँ विकसित कर सकता है, जो सभी विद्यार्थियों को समान रूप से सीखने का अवसर प्रदान करें। मातृभाषा के सकारात्मक उपयोग, गतिविधि-आधारित शिक्षण, संवादात्मक अभ्यास और आधुनिक शिक्षण तकनीकों के प्रयोग से हिंदी भाषा के प्रति विद्यार्थियों की रुचि और आत्मविश्वास को बढ़ाया जा सकता है।

इस प्रकार, हिंदी सीखने की चुनौतियों का समाधान केवल भाषा के नियमों को पढ़ाने तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके लिए एक समावेशी और विद्यार्थी-केंद्रित दृष्टिकोण की आवश्यकता है। बहुभाषी शिक्षा में हिंदी को प्रभावी रूप से सिखाने के लिए ऐसी रणनीतियों का विकास आवश्यक है, जो विद्यार्थियों की भाषाई पहचान का सम्मान करते हुए उन्हें हिंदी भाषा में दक्ष बनने के लिए प्रेरित करें। यह अध्ययन इस बात पर बल देता है कि उचित शिक्षण योजना, सहयोगी वातावरण और प्रभावी शैक्षणिक प्रयासों के माध्यम से बहुभाषी विद्यार्थियों के लिए हिंदी अधिगम को अधिक सफल और सार्थक बनाया जा सकता है।